

बाल संस्कार

प्रेरक कथाएं - 24

परमयोगिनी मुक्ताबाई



जो लोहेको सोना कर दे , वह पारस है कच्चा। जो लोहेको पारस कर दे , वह पारस है सच्चा।। महाराष्ट्र में समर्थ रामदास स्वामी , श्री एकनाथजी , नामदेवजी ऐसे ही संत हुए। एक परिवार का परिवार वहाँ संतों की सर्वश्रेष्ठ गणना में है और वह परिवार है श्रीनिवृत्तिनाथ जी का। निवृत्तिनाथ , ज्ञानेश्वर, सोपानदेव और इनकी छोटी बहिन मुक्ताबाई- सब के सब जन्म से सिद्ध योगी , परमज्ञानी, परमविरक्त एवं सच्चे भगवद्भक्त थे। जन्म से ही सब महापुरुष। आजन्म ब्रह्मचारी रहकर जीवों के उद्धार के लिये ही दिव्यजगत् से इस मूर्ति चतुष्टय का धरा पर अविर्भाव हुआ।

‘नाम और रूप की पृथक- पृथक कल्पना मिथ्या है। सब नाम विद्वल के ही नाम हैं। सब रूप उसी पण्ढरपुर में कमर पर हाथ रखकर ईंट पर खड़े रहने वाले खिलाड़ी ने रख छोड़े हैं। उन पाण्डुरंग के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।’ बड़े भाई निवृत्तिराथ ही सबके गुरु थे।

उन्होंने ही छोटे भाइयों और बहिन को यह उपदेश दिया था। 'विठोबा बड़े अच्छे हैं।' बारह वर्ष की बालिका मुक्ता बाई कभी-कभी बड़ी प्रसन्न होती। किसी सुन्दर पुष्प को लेकर वह तन्मय हो जाती। 'इतना मृदुल, इतना सुरभित, इतना सुन्दर रूप बनाया है, उन्होंने।' अपने बड़े भाई के उपदेश को हृदय से उसने ग्रहण कर लिया था। 'बड़े नटखट हैं पाण्डुरंग।' कभी वह झल्ला उठती, जब हाथों में काँटा चुभ जाता। 'काँटा, कंकड़, पत्थर-जाने इन रूपों के धारण में उन्हें क्या आनन्द आता है। अपने हाथों के दर्द पर उसका ध्यान कम ही जाता था। 'छिः, छिः, विठोबा बड़े गंदे हैं।' एक दिन उसने अपने बड़े भाई को दिखाया। 'दादा! देखो न, इस गंदी नाली में कीड़े बने बिलबिला रहे हैं! राम! राम!' उसके दादा ने उसे डाँट दिया। यह डाँटना व्यर्थ था। उस शुद्ध हृदय में मनन चल रहा था। पशु-पक्षी, स्थावर-जड़गम एक व्यापक सर्वेश को देखने की साधना थी यह। 'दादा! आज दीपावली है। ज्ञान और सोपान दादा भिक्षा में सभी कुछ ले आये हैं। क्या बनाऊँ, भिक्षा में आटा, दाल, बेसन, घी, शाक देखकर बालिका अत्यन्त प्रसन्न हो गयी थी। अपने बड़े भाई की वह कुछ सेवा कर सके, इससे बड़ा आनन्द उसने दूसरा कभी समझा ही नहीं था। 'मेरा मन चील्हा खाने का होता है।' निवृत्तिनाथ ने साधारण भाव से कह दिया। 'नमकीन भी बनाऊँगी और मीठे भी।' बड़ी प्रसन्नता से उछलती-कूदती वह चली गयी। परन्तु घर में तवा तो है ही नहीं। बर्तन तो विसोबा चाटी ने कल रात्रि में सब चोरी कर दिये। बिना तवे के चील्हे किस प्रकार बनेंगे। जल्दी से मिट्टी का तवा लाने वह कुम्हारों के घर की ओर चल पड़ी। मार्ग में ही विसोबा से भेंट हो गयी। ईर्ष्यालु ब्राह्मण के पूछने पर मुक्ताबाई ने ठीक-ठीक बता दिया। माँगेंगे भीख और जीभ इतनी चलती है। विसोबा साथ लग गया। उसने कुम्हारों को मना कर दिया। 'जो इस संघासी की लड़की को तवा देगा, उसे मैं जाति से बाहर कर दूँगा।' विवश होकर मुक्ताबाई को लौटना पड़ा। उसका मुख उदास हो रहा था। घर पहुँचते ही ज्ञानेश्वर ने उसकी उदासी का कारण पूछा। बालिका ने सारा हाल सुना दिया। 'पगली, रोती क्यों है! तुझे चील्हे बनाने हैं या तवे का अचार डालना है?' बहिन को समझाकर ज्ञानेश्वर नंगी पीठ करके बैठ गये। उन योगिराज ने प्राणों का संयम करके शरीर में अग्नि की भावना की पीठ तप्त तवे की भाँति लाल हो गयी। 'ले; जितने चील्हे सेंकने हो, इस पर सेंक ले।' मुक्ताबाई स्वयं परमयोगिनी थीं। भाइयों की शक्ति उनसे अविदित नहीं थी। उन्होंने बहुत से मीठे और नमकीन चील्हे बना लिये। 'दादा! अपने तवे को अब शीतल कर लो।' सब बनाकर उन्होंने भाई से कहा। ज्ञानेश्वर ने अग्निधारण का उपसंहार किया। 'मुक्ति ने निर्मित किये और ज्ञान की अग्नि में सेंके गये। चील्हों के स्वाद का क्या पूछना।' निवृत्तिनाथ, भोजन करते हुए भोजन की प्रशंसा कर रहे थे। इतने में एक बड़ा-सा काला कुत्ता आया और अवशेष चील्हे मुख में भरकर भागने लगा। तीनों भाई साथ ही बैठे थे। उनका भोजन प्रायः समाप्त हो चुका था। निवृत्तिनाथ ने कहा- 'मुक्ता! जल्दी से कुत्ते को मार, सब चील्हे ले जायेगा तो तू ही भूखी रहेगी।' 'माँ! किसे? विट्ठल ही तो कुत्ता भी बन गये हैं।' मुक्ताबाई ने बड़ी निश्चिन्तता से कहा। उन्होंने कुत्ते की ओर देखा तक नहीं। तीनों भाई हँस पड़े। ज्ञानेश्वर ने पूछा- 'कुत्ता तो विट्ठल बन गये हैं और विसोबाचाटी?' 'वे भी विट्ठल ही हैं।' मुक्ता का स्वर ज्यों का त्यों था।

विसोबा चाटी मुक्ता के साथ ही कुम्हार के घर से पीछा करता आया था। वह देखना चाहता था कि तवा न मिलने पर ये सब क्या करते हैं ? ज्ञानेश्वर की पीठ पर चील्हे बनते देख उसे बड़ी जलन हुई। जाकर कुत्ते को वही पकड़ लाया था। मुक्ता के शब्दों ने उसके हृदय बाण की भाँति आघात किया। वह जहाँ छिपा था वहाँ से बाहर निकल कर मुक्ताबाई से बोला, “मैं महा- अधम हूँ। मैंने आप लोगों को कष्ट देने में कुछ भी उठा नहीं रखा है। आप दयामय हैं, साक्षात् विठ्ठल के स्वरूप हैं। मुझ पामर को क्षमा करें। मेरा उद्धार करें, मुझे अपने चरणों में स्थान दें।”

कई दिनों तक विसोबा ने बड़ा आग्रह किया। उसके पश्चात्ताप एवं हठ को देखकर निवृत्तिनाथ ने मुक्ताबाई को उसे दीक्षा देने का आदेश दिया। मुक्ताबाई ने उसे दीक्षा दी। मुक्ताबाई की कृपा से विसोबा चाटी जैसा ईश्यालु ब्राह्मण प्रसिद्ध महात्मा विसोबा खेचर हो गया। उसने योग के द्वारा समाधि अवस्था प्राप्त की। महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध महात्मा नामदेव जी इन्हीं विसोबा खेचर के शिष्य हुए हैं।

